

## वीर बाल दिवस निबंध

### प्रस्तावना

भारत में हर साल 26 दिसंबर को 'वीर बाल दिवस' के रूप में मनाया जाता है। यह दिन दसवें सिख गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के छोटे साहिबजादों—साहिबजादा जोरावर सिंह जी और साहिबजादा फतेह सिंह जी के अद्वितीय और सर्वोच्च बलिदान को याद करने के लिए समर्पित है। यह दिवस उनके अटूट साहस, अडिग विश्वास और कम उम्र में दी गई शहादत को श्रद्धांजलि है। वीर बाल दिवस राष्ट्र को इन बहादुर बच्चों द्वारा प्रदर्शित नैतिक बल और आध्यात्मिक दृढ़ता की याद दिलाता है, जिनका बलिदान सदियों तक प्रेरणा देता रहेगा।

### ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और बलिदान

वीर बाल दिवस का ऐतिहासिक आधार मुगल काल के दौरान न्याय और धार्मिक स्वतंत्रता के लिए हुए संघर्ष में गहराई से निहित है। यह घटना वर्ष 1705 की है, जब साहिबजादा जोरावर सिंह जी (केवल नौ वर्ष के) और साहिबजादा फतेह सिंह जी (केवल सात वर्ष के) को सरहिंद के मुगल गवर्नर, वज़ीर खान द्वारा पकड़ लिया गया था।

उन्हें अपना धर्म छोड़ने के बदले में धन और आराम की पेशकश के साथ भारी दबाव का सामना करना पड़ा। अपनी कम उम्र के बावजूद, साहिबजादों ने अपने विश्वास पर अडिग रहते हुए धर्म छोड़ने से साफ इनकार कर दिया। उनका यह साहस उस समय के क्रूर शासकों को भी चकित कर गया।

### शहादत: सत्य पर अडिगता का प्रमाण

अपने इनकार के परिणामस्वरूप, साहिबजादों को मृत्युदंड दिया गया और उन्हें दीवार में ज़िंदा चुनवा दिया गया। उनकी शहादत भारतीय इतिहास के सबसे हृदयविदारक, फिर भी प्रेरणादायक अध्यायों में से

एक है। यह उन असाधारण मूल्यों को दर्शाती है जो उनके पिता, गुरु गोबिंद सिंह जी ने उनमें स्थापित किए थे, जिन्होंने धर्म, साहस और सत्य के प्रति समर्पण पर जोर दिया था।

- **बलिदान का संदेश:** उनका बलिदान केवल बहादुरी का कार्य नहीं था, बल्कि यह उत्पीड़न और अन्याय के विरुद्ध एक शक्तिशाली संदेश था।

## आधुनिक भारत में इसका महत्व

वीर बाल दिवस आधुनिक भारत में अत्यधिक महत्व रखता है। यह युवाओं को साहस, नैतिक ईमानदारी और बलिदान के आदर्शों के बारे में जानने के लिए प्रेरित करता है। इस दिन स्कूलों और समुदायों में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है, जिनमें साहिबजादों के जीवन पर आधारित निबंध, भाषण और चर्चाएँ शामिल हैं।

- **मूल्यों का संचार:** ये गतिविधियाँ छात्रों के बीच देशभक्ति, सहिष्णुता और मानवीय गरिमा के प्रति सम्मान जैसे मूल्यों को विकसित करने में मदद करती हैं। यह दिवस उन्हें याद दिलाता है कि सबसे बड़ी शक्ति सत्य और धर्म में निहित है।

## उपसंहार

संक्षेप में, वीर बाल दिवस केवल अतीत का स्मरण मात्र नहीं है, बल्कि यह वर्तमान और भविष्य के लिए एक मार्गदर्शक प्रकाश है। साहिबजादा जोरावर सिंह जी और साहिबजादा फतेह सिंह जी का बलिदान हमें सिखाता है कि सच्ची शक्ति विपरीत परिस्थितियों में भी सत्य और विश्वास के लिए खड़े होने में है। उनकी विरासत भारत को जीवन के हर क्षेत्र में न्याय, साहस और धार्मिकता को बनाए रखने के लिए प्रेरित करती रहेगी।